पौरूष ग्रन्थि वृद्धि
(मूत्राष्ठीला)

वरूण

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें :

महानिदेशक
केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
जवाहर लाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी अनुसंधान भवन
61–65 संस्थानिक क्षेत्र, 'डी' ब्लाक के सामने, जनकपुरी
नई दिल्ली–110058
फोनः +91-11-28525520/28524457, फैक्सः +91-11-28520748
ई–मेलः **dg-ccras@nic.in/ccras_dir@nic.in**
वैबसाईटः **www.ccras.nic.in**
www.indianmedicine.nic.in

© **सी.सी.आर.ए.एस.** 2014
यह दस्तावेज केवल प्रचार-प्रसार एवं वितरण हेतु तैयार किया गया है, व्यावसायिक उपयोग के लिए नहीं। इस सामग्री का पुनरूपयोग सी.सी.आर.ए.एस. से अनुमति लेने के बाद ही किया जा सकता है।

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय
(आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी)
भारत सरकार

BPH (पौरूष ग्रन्थि की सौम्य वृद्धि)

वायु मूत्राशय एवं गुदप्रदेश में अवरोध उत्पन्न कर उन्हें फुलाकर पाषाणखण्ड के समान कठोर, चलायमान, लटका हुआ, अत्यंत शूलयुक्त ग्रन्थि पैदा कर मल व मूत्र का अवरोध पैदा करती है।

मूत्ररोग

मूत्रमार्ग में होने वाले रोग जिसके कारण दाह, दंश के समान शूल व मूत्रत्याग में कठिनाई होती है। ये अनेक कारणों से होते हैं जैसे संक्रमण आदि ।

BPH (पौरूष ग्रन्थि की सौम्य वृद्धि–मूत्ररोग के क्या लक्षण हैं ?)

- मूत्राशय का पूर्णरूप से खाली न होना
- रात्रि में बार–बार मूत्रत्याग
- मूत्रत्याग के मध्य की अवधि का कम होना
- मूत्रत्याग के प्रारम्भ में कठिनाई
- मूत्रप्रवृत्ति के समय जोर लगाना
- मूत्र की धार का कमजोर होना एवं बूंद–बूंद कर टपकना

पुनर्नवा

मूत्ररोग

- दाह के साथ मूत्रत्याग
- मूत्रमार्ग में दाहयुक्त शूल
- मूत्रत्याग के दौरान व कुछ देर बाद तक नाभिप्रदेश के नीचे शूल
- कुक्षिशूल
- मूत्राशय खाली होने के पश्चात् भी मूत्रत्याग की प्रबल इच्छा
- कंपकंपी सहित ज्वर, हृल्लास या वमन
- कभी–कभी मूत्रत्याग के साथ रक्त अथवा पूय की प्रवृत्ति

गोक्षुर

आयुर्वेदीय उपचार

दोषों की प्रबलता के आधार पर सभी का उपचार मूत्र–विरेचनीय द्रव्यों, बस्ति व मूत्रबस्ति के द्वारा करना चाहिए

- स्नेहन
- स्वेदन
- विरेचन
- बस्ति (औषधयुक्त एनीमा)–स्थिति के अनुसार

कतिपय प्रमुख आयुर्वेदिक योग

- चन्द्रप्रभा वटी
- गोक्षुरादि गुग्गुलु
- श्वेत पर्पटी

कतिपय लाभकर वानस्पतिक द्रव्य

- वरूण (Crataeva nurvula)
- गोक्षुर (Tribulus terrestris)
- पुनर्नवा (Boerhavia diffusa)
- नारिकेल (Cocas nucifera)
- शिग्रु (Moringa oleifera)
- पाषाणभेद (Saxifraga ligulata)

नारियल

शिग्रु

पथ्य (क्या करें) ✓

- ✓ गेहूं, पुराना चावल, मुद्ग (साबुत मूंग) सूप, कुलत्थ (कुलथी), यवोदक (जौ का पानी)
- ✓ लहसुन, हल्दी, अदरक, पटोल (परवल), शिग्रु (सहिजन), नारियल, खीरा, तरबूज, धनियां
- ✓ जीरा, गन्ना, अंगूर, तक्र आदि
- ✓ पर्याप्त मात्रा में जल का सेवन
- ✓ अवगाह (पानी से भरे टब में बैठना), शीतजल स्नान, स्वेदन आदि

पाषाणभेद

अपथ्य (क्या न करें) ✖

- ✖ टमाटर, मटर, काले चने, पालक
- ✖ जामुन, सरसों, तिल, गुड़, अधिक गर्म व मसालेदार भोजन आदि
- ✖ प्राकृतिक वेगों का धारण –अधिक गर्मी का सेवन

महत्वपूर्ण वैज्ञानिक संदर्भ एवं पाठ्य सामग्री

- कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री : सुश्रुत संहिता, चौरवम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी,10 वां संस्करण, 1996
- प्रो. पी. वी. शर्मा, : चरक सहिंता भाग 1व 2 (अंग्रेजी अनुवादित संहिता), चौरवम्बा ओरियन्टेलिया, गोकुल भवन, ज्ञ.37 ध109एण गोपाल मंदिर लेन, वाराणसी –1 (भारत) प्रथम संस्करण,1983.
- सप्रा उमेश कुमार व अन्य ''रिसेन्ट एडवांसिज इन दी फील्ड़ ऑफ यूटीआई इन आयुर्वेद ''दी जरनल ऑफ रिसर्च एंड एजूकेशन इन इंड़ियन मेडिसिन, खण्ड़ ग्ग्. 2 ए आई. एस. एन. 0970–7700 अप्रैल–जून, 2007